



सीएसआईआर
CSIR
भारत का नवाचार इंजन
The Innovation Engine of India



NISPR
National Institute of Science Communication and Policy Research
सीएसआईआर-निसप्र

प्रगति, विकास और आशा सीएसआईआर समाचार

वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद का गृह बुलेटिन

वर्ष 12 अंक 5

www.csir.res.in

मई 2024

सीएसआईआर महानिदेशक द्वारा सीरी के जयपुर परिसर का दौरा



सेमीकंडक्टर उद्योग में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी।

इस अवसर पर महानिदेशक सीएसआईआर ने परिसर में स्थापित विभिन्न परीक्षण और उत्पादन सुविधाओं का उद्घाटन किया, जिनमें एटीएमपी (असेम्बली, टेस्टिंग, मार्केटिंग एंड पैकेजिंग) सेमीकंडक्टर सुविधाएं, सोलर ग्रिड टाइड इन्वर्टर परीक्षण सुविधा, एनएबीएल मान्यता प्राप्त कैलिब्रेशन प्रयोगशाला और आंतरिक सुरक्षा परीक्षण सुविधाएं शामिल हैं। ये सुविधाएं परियोजना संबंधी विभिन्न आवश्यकताओं को पूरा करने वाले इन-हाउस उत्पाद विकास के लिए बहुत महत्वपूर्ण हैं।

डॉ. (श्रीमती) एन. कलैसेल्वी, महानिदेशक, सीएसआईआर एवं सचिव, डीएसआईआर, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय, भारत सरकार ने हाल ही में सीएसआईआर-केंद्रीय इलेक्ट्रॉनिकी अभियांत्रिकी अनुसंधान संस्थान

(सीएसआईआर-सीरी), के जयपुर परिसर का दौरा किया। इस अवसर पर परस्पर चर्चा के दौरान डॉ. एन कलैसेल्वी ने सीरी के निदेशक डॉ. पी. सी. पंचारिया से हीरा आधारित सेमीकंडक्टर प्रयोगशाला स्थापित करने पर विचार करने का आग्रह किया, जो भविष्य के

सीएसआईआर सीरी के जयपुर परिसर में ये शोध सुविधाएं डीएसआईआर-सीआरटीडीएच कार्यक्रम के तहत वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान विभाग (डीएसआईआर) जैसी विभिन्न फंडिंग एजेंसियों के सहयोग से स्थापित की गई हैं।



उन्होंने जयपुर परिसर में उपलब्ध शोध सुविधाओं एवं प्रयोगशालाओं की सराहना करते हुए डॉ. पंचारिया को इन सुविधाओं के साथ अनुसंधान-कार्य में महत्वपूर्ण प्रगति लाने की संस्थान की प्रतिबद्धता के लिए शुभकामनाएं प्रदान की।

इससे पूर्व डॉ. पी. सी. पंचारिया, निदेशक, सीएसआईआर-सीरी ने जयपुर परिसर पहुँचने पर डॉ. एन. कलैसेल्वी का औपचारिक स्वागत किया और परिसर में कार्यरत सभी कार्मिकों का महानिदेशक महोदया से औपचारिक परिचय कराया। डॉ. पंचारियाने डॉ. कलैसेल्वी से चर्चा करते हुए विभिन्न सेमीकंडक्टर डिवाइस (आईसी)

और सीएसआईआर-सीरी में उन्नत एटीएमपी सेमीकंडक्टर सुविधाओं की आवश्यकता पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि ये सुविधाएं बैच-स्तरीय सेमीकंडक्टर युक्तियों के विकास में मदद करेंगी, इस प्रकार उद्योगों को एंड-टू-एंड अर्थात संपूर्ण समाधान प्रदान करेंगी।

इस अवसर पर उद्योग एवं अकादमिक जगत के प्रतिनिधियों तथा अन्य विविध क्षेत्रों के गणमान्य व्यक्तियों के साथ एक महत्वपूर्ण बैठक का भी आयोजन किया गया जिसमें राजस्थान विश्वविद्यालय की कुलपति प्रोफेसर अल्पना कटेजा; वरिष्ठ आईएस श्री वी. सरवण कुमार, सचिव, डीएसटी, राजस्थान; डॉ. मेघेंद्र शर्मा, सचिव, विज्ञान भारती -

प्रयोगशालाओं को राजस्थान में 'सेन्टर ऑफ एक्सिलेन्स' के रूप में स्थापित करने पर भी चर्चा की गई।

डॉ. कलैसेल्वी ने इलेक्ट्रॉनिक्स और संबद्ध उद्योग के विकास को बढ़ावा देने में जयपुर परिसर में स्थापित महत्वपूर्ण अत्याधुनिक सुविधाओं के महत्व को रेखांकित किया और इस क्षेत्र में महत्वपूर्ण प्रगति को प्रेरित करने के लिए सीएसआईआर की प्रतिबद्धता की पुष्टि की।

सीएसआईआर-सीरी के जयपुर परिसर में स्थापित शोध सुविधाएँ और बैठक के दौरान हुई ठोस चर्चा राजस्थान सहित देश भर में विज्ञान, प्रौद्योगिकी और नवाचार को आगे बढ़ाने के प्रति सीएसआईआर के समर्पण और सकारात्मक दृष्टिकोण

को दर्शाती हैं।

सीएसआईआर सामाजिक हित के लिए अपने सहयोगात्मक प्रयासों और रणनीतिक पहल के माध्यम से सामाजिक-आर्थिक प्रगति के साथ-साथ तकनीकी प्रगति को आगे बढ़ाने में अग्रणी भूमिका निभा रहा है।



राजस्थान एवं अन्य गणमान्य अतिथियों ने प्रतिभागिता की। इस बैठक में सीएसआईआर द्वारा विज्ञान और प्रौद्योगिकी के माध्यम से राजस्थान में वैज्ञानिक नवाचार और प्रगति को बढ़ावा देने पर चर्चा की गई। इसके अलावा बैठक में मुख्य रूप से सीएसआईआर

सीएसआईआर-सीआरआरआई की स्टील स्लैग सड़क प्रौद्योगिकी की बुनियादी ढांचे के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका



सीएसआईआर-केंद्रीय सड़क अनुसंधान संस्थान द्वारा अन्वेषित की गई स्टील स्लैग रोड प्रौद्योगिकी एक महत्वपूर्ण दक्षता और पर्यावरण-चेतना का प्रतीक है। संसाधित स्टील स्लैग समुच्चयों का उपयोग करके, यह विधि न केवल सड़क की लम्बी अवधि को बढ़ाती है, बल्कि यह सड़क की निर्माण लागत में भी लगभग 32% की उल्लेखनीय कमी लाती है। सीएसआईआर-सीआरआरआई के सहयोग से जेएसडब्ल्यू स्टील लिमिटेड ने एनएच-66 के इंदौर-पनवेल खंड पर इस प्रौद्योगिकी के कार्यान्वयन का नेतृत्व किया है, जिसमें 80,000 टन कोनार्क (CON-ARC) स्टील स्लैग का उपयोग किया गया है। कोनार्क में दो प्रक्रियाओं व (CONverter ARCing)) का संलयन निहित होता है।

कोनार्क स्टील बनाने की प्रक्रिया दो प्रकार की होती है। पहली पहली प्रक्रिया उच्च गुणवत्ता वाले कार्बन स्टील के उत्पादन के लिए अपनाई जाती है। दूसरी प्रक्रिया का प्रयोग स्टेनलेस स्टील के उत्पादन हेतु किया जाता है। पूर्व में कई इस्पात निर्माण प्रौद्योगिकियों और प्रक्रियाओं के आगमन के साथ, उद्योग के लिए उन इस्पात

निर्माण प्रक्रियाओं का चयन करना महत्वपूर्ण हो गया है जो वित्त और संसाधन उपयोग के मामले में अधिकतम लाभ के लिए कुशल और अनुकूलित हैं। बीओएफ और ईएएफ जैसी इस्पात निर्माण प्रक्रियाओं ने पिछले कई दशकों में इस्पात उत्पादन को काफी प्रभावित किया है और वर्तमान समय में इसका बड़े पैमाने पर उपयोग किया जा रहा है। हालाँकि, ऊर्जा खपत और प्रक्रिया दक्षता के संदर्भ में इन इस्पात निर्माण प्रक्रियाओं की अपनी सीमाएँ और कमियाँ हैं, और इसने अधिक कुशल इस्पात निर्माण प्रक्रिया की आवश्यकता को जन्म दिया है, जिसका उपयोग कच्चे माल की एक विस्तृत श्रृंखला के साथ भी किया जा सकता है। ऐसी ही एक इस्पात निर्माण प्रक्रिया है जिसे कोनार्क इस्पात निर्माण प्रक्रिया के नाम से जाना जाता है, इसका उपयोग कई दूरगामी लाभ और व्यापक प्रयोज्यता के कारण पिछले कुछ वर्षों से कई इस्पात संयंत्रों में किया जा रहा है। कोनार्क प्रक्रिया के विकास का मुख्य कारण एक ही प्रसंस्करण इकाई के अंतर्गत बीओएफ प्रक्रिया और ईएएफ प्रक्रिया दोनों का लाभ प्राप्त करना है।

जेएसडब्ल्यू स्टील लिमिटेड के सीओओ

जीएस राठौर ने इस उपलब्धि को संभव बनाने वाले सहयोगात्मक प्रयासों की सराहना की। भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण के सहयोग और सीएसआईआर-सीआरआरआई की सड़क प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में विशेषज्ञता ने राष्ट्रीय राजमार्ग निर्माण के लिए एक परिवर्तनकारी दृष्टिकोण का मार्ग प्रशस्त किया है। सीएसआईआर-सीआरआरआई के निदेशक डॉ. मनोरंजन परिदा ने स्टील स्लैग उपयोग दिशा-निर्देशों को मानकीकृत करने और देश भर में संधारणीय बुनियादी ढाँचा प्रथाओं को बढ़ावा देने के लिए चल रहे प्रयासों के बारे में उल्लेख किया।

यह पहल न केवल भारत के बढ़ते स्टील स्लैग उत्पादन को संबोधित करती है, जिसके 2030 तक 60 मिलियन टन तक पहुंचने का अनुमान है, बल्कि स्लैग निपटान से जुड़ी पर्यावरणीय चिंताओं के लिए भी महत्वपूर्ण समाधान प्रदान करती है।

स्टील स्लैग को सड़क निर्माण सामग्री में बदलकर, भारत न केवल प्रदूषण के जोखिम को कम करने में सफल होगा अपितु यह हरित भविष्य की दिशा में बुनियादी ढांचे के विकास को भी सुनिश्चित करेगा।

सीएसआईआर- निस्पर द्वारा जलवायु परिवर्तन विषय पर छात्र-विज्ञान संपर्क कार्यक्रम का आयोजन

सीएसआईआर -राष्ट्रीय विज्ञान संचार एवं नीति अनुसंधान संस्थान (निस्पर) ने जिज्ञासा परियोजना के अंतर्गत हाल ही में "जलवायु परिवर्तन का प्रभाव: खाद्य और जल स्थिरता" शीर्षक पर एक प्रभावी चर्चा हेतु एक छात्र-विज्ञान संपर्क कार्यक्रम का आयोजन किया।

इस कार्यक्रम का उद्देश्य स्कूली छात्रों को जोड़कर विज्ञान शिक्षा के माध्यम से स्थिरता की दिशा में काम करना है।

इस कार्यक्रम में दो स्कूल, केंद्रीय विद्यालय बीएसएफ कैंप छावला और कैम्ब्रिज स्कूल, श्रीनिवासपुरी, नई दिल्ली से कुल 55 विद्यार्थियों ने भाग लिया।

इस अवसर पर प्रो. रंजना अग्रवाल, निदेशक, सीएसआईआर-निस्पर ने अपने संबोधन में कहा कि जलवायु परिवर्तन के गंभीर चुनौतियों से निपटने के क्रम में, हमने 'रिकल अच्छे हैं' नामक अभियान शुरू किया है जिसमें कर्मचारी ऊर्जा संरक्षण को प्रोत्साहित करने के लिए बिना इस्त्री किए कपड़े पहनेंगे। हमारा लक्ष्य जलवायु परिवर्तन के बारे में जागरूकता बढ़ाना और छात्रों को पर्यावरण संरक्षण और ऊर्जा-बचत संबंधी तौर-तरीकों में सक्रिय रूप से भाग लेने के लिए प्रेरित करना है।

उन्होंने कहा कि इस छात्र-विज्ञान संपर्क कार्यक्रम के माध्यम से, हम एक ऐसी पीढ़ी



को तैयार करने के लिए समर्पित हैं जो अपने पर्यावरणीय प्रभाव से अवगत हो और उसमें सकारात्मक बदलाव लाने के लिए तैयार हो।"

इस कार्यक्रम में निर्भया विज्ञान संग्रहालय, एमसीडी, नई दिल्ली के श्री अमित कुमार शर्मा के नेतृत्व में "डूइंग साइंस इज फन" नामक एक आकर्षक गतिविधि भी प्रदर्शित की गई। 'स्वास्तिक' प्रदर्शनी का दौरा भी इस कार्यक्रम

का एक महत्वपूर्ण हिस्सा था।

इस कार्यक्रम में सीएसआईआर-निस्पर के जिज्ञासा परियोजना के प्रधान अन्वेषक और नोडल अधिकारी, डॉ. सुमन रे (प्रधान वैज्ञानिक), वरिष्ठ वैज्ञानिक, डॉ. शिव नारायण निषाद, और सीएसआईआर-निस्पर की वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक डॉ. कनिका मलिक भी उपस्थित थीं।

सीएसआईआर-आईआईपी ने अपना 65वां स्थापना दिवस मनाया

सीएसआईआर-भारतीय पेट्रोलियम संस्थान (आईआईपी), देहरादून ने हाल ही में अपना 65वां स्थापना दिवस मनाया। सीएसआईआर-आईआईपी की स्थापना 14 अप्रैल 1960 को की गई थी। यह एक प्रमुख अनुसंधान एवं विकास संगठन है। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में नीति आयोग के माननीय सदस्य और सीएसआईआर-आईआईपी के सलाहकार पद्मभूषण डॉ. वी. के. सारस्वत उपस्थित हुए। इस उत्सव के दौरान संस्थान के अग्रणी अनुसंधान, नवीन प्रौद्योगिकियों और उद्योग सहयोग से जुड़े समृद्ध इतिहास के बारे में व्यापक चर्चा की गई।



डॉ. वी. के. सारस्वत ने इस अवसर पर अपने संबोधन में सीएसआईआर-आईआईपी की टीम को बधाई दी और संस्थान के 65वें स्थापना दिवस पर शुभकामनाएं दीं। उन्होंने "भारत में ऊर्जा परिवर्तन" विषय पर एक व्याख्यान भी प्रस्तुत किया। डॉ. सारस्वत ने अपने संबोधन में स्वच्छ और कार्बन-मुक्त प्रौद्योगिकियों के अनुप्रयोग पर विशेष जोर दिया, जो निकट भविष्य में दुनिया को एक नई दिशा की ओर ले जाएगी। उन्होंने वैज्ञानिकों को ई-मेथनॉल और ग्रीन हाइड्रोजन के क्षेत्र में महत्वपूर्ण अनुसंधान करने के लिए भी प्रोत्साहित किया। डॉ. सारस्वत ने कहा कि भारतीय प्रौद्योगिकियों को दुनिया भर में सक्षम बनाए रखने के लिए, हमें कार्बन उत्सर्जन को कम करने की दिशा में सख्ती से काम करना शुरू करना होगा। डॉ. सारस्वत ने सीएसआईआर-भारतीय पेट्रोलियम संस्थान (सीएसआईआर

-आईआईपी) के वैज्ञानिक समुदाय के साथ भी बातचीत की। उन्होंने बातचीत के दौरान, वैज्ञानिकों, तकनीशियनों, विद्यार्थियों और कर्मिकों की उनके निरंतर उत्कृष्ट प्रदर्शन की प्रशंसा की, जिससे संस्थान की ख्याति में वृद्धि हुई है। सीएसआईआर-भारतीय पेट्रोलियम संस्थान (आईआईपी) के निदेशक डॉ. हरेंद्र सिंह बिष्ट ने विकसित भारत के संकल्प को पूरा करने के लिए वर्ष 2024 से वर्ष 2030 तक संस्थान की रूपरेखा प्रस्तुत की। डॉ. सारस्वत ने रूपरेखा का मूल्यांकन किया और इसे राष्ट्र के लिए और अधिक लाभकारी बनाने के लिए विभिन्न सुझाव दिए।

डॉ. सिंह बिष्ट ने पिछले 64 वर्षों के दौरान संस्थान द्वारा प्राप्त की गई विभिन्न उपलब्धियों पर प्रकाश डाला, जिसमें मुख्य रूप से नुमालीगढ़ वैक्स प्लांट, सस्टेनेबल एविएशन फ्यूल, यूएस ग्रेड गैसोलीन, मेडिकल ऑक्सीजन इकाइयां, स्वीटिंग कैटलिस्ट,

पीएनजी बर्नर, बेहतर गुड़ भट्टी आदि सम्मिलित हैं। इस अवसर पर मसूरी के ओक ग्राव स्कूल के विद्यार्थियों और शिक्षकों ने भी जिज्ञासा 2.0 कार्यक्रम के एक भाग के रूप में आयोजित इन कार्यक्रमों में भाग लिया। विद्यार्थियों ने संस्थान की विभिन्न प्रयोगशालाओं का भ्रमण किया और उनमें काम करने वाले वैज्ञानिकों और अनुसंधानवेत्ताओं के साथ बातचीत की। जिज्ञासा 2.0 कार्यक्रम का उद्देश्य स्कूल जाने वाले बच्चों में वैज्ञानिक चेतना विकसित करना है ताकि वे बड़े होकर देश में उभरते वैज्ञानिक बन सकें।

इस समारोह का समापन सीएसआईआर-भारतीय पेट्रोलियम संस्थान (आईआईपी) के वरिष्ठ प्रशासन नियंत्रक श्री अंजुम शर्मा द्वारा दिए गए धन्यवाद प्रस्ताव के साथ हुआ। उन्होंने इस कार्यक्रम को सफल बनाने में प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष से जुड़े सभी लोगों का आभार व्यक्त किया।

सीएसआईआर-निस्पर द्वारा "स्वास्थ्य और स्वच्छता: परस्पर सम्बंध" विषय पर व्याख्यान का आयोजन

सीएसआईआर-राष्ट्रीय विज्ञान संचार एवं नीति अनुसंधान संस्थान (सीएसआईआर-निस्पर) ने स्वच्छता पखवाड़ा (1-15 मई) के एक भाग के रूप में "स्वास्थ्य और स्वच्छता: परस्पर सम्बंध" विषय पर एक व्याख्यान का आयोजन किया। यह व्याख्यान नेशनल हार्ट इंस्टीट्यूट के प्रमुख, वरिष्ठ सलाहकार हृदय रोग विशेषज्ञ प्रो. श्रीधर द्विवेदी द्वारा प्रस्तुत किया गया।

यह व्याख्यान सीएसआईआर-निस्पर द्वारा संस्थान के विवेकानंद हॉल में आयोजित स्वच्छता पखवाड़ा के 15 दिवसीय कार्यक्रम के दूसरे दिन आयोजित किया गया था। इसमें स्वच्छता और समग्र कल्याण के बीच आंतरिक संबंध पर ध्यान केंद्रित किया गया।

इस अवसर पर अपने संबोधन में प्रो. श्रीधर द्विवेदी ने न केवल शारीरिक स्वास्थ्य बल्कि मानसिक और आध्यात्मिक कल्याण के महत्व पर भी बल दिया।

उन्होंने बताया कि सभी धर्म स्वच्छ जीवन-शैली को प्रोत्साहित करते हैं। उन्होंने उपस्थित जनों से आग्रह किया कि वे कोविड महामारी के दौरान अपनाई गई स्वस्थ आदतों को जारी रखें। उन्होंने स्वास्थ्य के लिए एक समग्र दृष्टिकोण की आवश्यकता पर बल दिया और कहा कि इसमें उचित स्वच्छता प्रथाएं और एक संतुलित जीवन शैली सम्मिलित है जो एक स्वस्थ एवं आदर्श जीवन का मूलाधार होते हैं।



सीएसआईआर-निस्पर की निदेशक के रूप में भारत की छवि को सुधारना और प्रो. रंजना अग्रवाल ने स्वच्छता को एक मिशन बढ़ाना है।



स्वच्छता पखवाड़ा पहल इस प्रतिबद्धता का प्रमाण है। सीएसआईआर-राष्ट्रीय विज्ञान संचार और नीति अनुसंधान संस्थान (निस्पर) भारत सरकार के विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्रालय, वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान परिषद के तहत एक घटक प्रयोगशाला है। यह विज्ञान संचार, साक्ष्य आधारित विज्ञान प्रौद्योगिकी और नवाचार नीति अनुसंधान और जनता के बीच वैज्ञानिक जागरूकता को बढ़ावा देने के लिए समर्पित है।

सीएसआईआर-एनजीआरआई द्वारा केएबीआईएल के साथ समझौता-ज्ञापन हस्ताक्षर किया गया



सीएसआईआर-राष्ट्रीय भूभौतिकी अनुसंधान संस्थान (सीएसआईआर-एनजीआरआई) ने महत्वपूर्ण और रणनीतिक खनिजों से जुड़ी परियोजनाओं और गतिविधियों को प्रोत्साहन देने के उद्देश्य से भूभौतिकीय जांच के क्षेत्र में दीर्घकालिक सहयोग बढ़ाने के लिए खनिज विदेश इंडिया लिमिटेड (केएबीआईएल) के साथ एक समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए।

यह समझौता ज्ञापन (एमओयू) भुवनेश्वर स्थित नालको के कॉर्पोरेट कार्यालय में

सीएसआईआर-एनजीआरआई के निदेशक डॉ. प्रकाश कुमार तथा श्री सदाशिव सामंतराय, निदेशक, नालको (वाणिज्यिक) एवं सीईओ, केएबीआईएल द्वारा श्री श्रीधर पात्रा, सीएमडी, नालको एवं अध्यक्ष, केएबीआईएल की उपस्थिति में किया गया।

इस सहयोगपूर्ण प्रयास का मुख्य फोकस भूभौतिकी, भू-रासायनिक और भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण, डेटा विश्लेषण, विवेचना और मॉडलिंग, वैज्ञानिक जानकारी को साझा करने, तकनीकी सहयोग और सलाहकार सेवाओं पर केंद्रित होगा।

नालको के सीएमडी और केएबीआईएल के चेयरमैन श्री श्रीधर पात्रा ने कहा कि इस भागीदारी से केएबीआईएल की परियोजनाओं में नवाचार और ठोस कदम उठाने में एक महत्वपूर्ण सहयोग प्राप्त होगा।

केएबीआईएल भारत सरकार के खान मंत्रालय के तहत आने वाले तीन सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों यथा: नेशनल एल्युमीनियम कंपनी लिमिटेड (नालको), हिंदुस्तान कॉपर लिमिटेड (एचसीएल) और मिनरल एक्सप्लोरेशन एंड कंसल्टेंसी लिमिटेड (एमईसीएल) की एक संयुक्त उद्यम की एक कंपनी है।

सीएसआईआर-आईआईआईएम द्वारा चिनाब घाटी के किसानों के लिए बीज सामग्री वितरण कार्यक्रम का आयोजन



सीएसआईआर-भारतीय समवेत औषध संस्थान, जम्मू ने हाल ही में सामुदायिक हॉल डोडा में सीएसआईआर-फ्लोरीकल्चर मिशन के क्षेत्र विस्तार अभियान के एक भाग के रूप में डोडा जिला के किसानों के लिए गुणवत्तापूर्ण बीज वितरण संबंधी एक कार्यक्रम का आयोजन किया। यह कार्यक्रम डॉ. जबीर अहमद, निदेशक, सीएसआईआर आईआईआईएम, जम्मू के मार्गदर्शन में आयोजित किया गया। इस एक दिवसीय कार्यक्रम में डोडा जिले के विभिन्न क्षेत्रों से लगभग 150 किसानों ने भाग लिया, जहां किसानों को गेंदा की खेती के लिए वैज्ञानिक विधियों के अनुप्रयोग द्वारा इसके उत्पादन और प्रबंधन के लिए प्रशिक्षण और कौशल प्रदान किया गया। इस कार्यक्रम में सभी किसानों को गेंदा के गुणवत्ता वाले बीज भी प्रदान किए गए। इस कार्यक्रम में प्रसिद्ध पुष्पविज्ञानी तेजिंदर सिंह वजीर और

हिंदू भूषण, सदस्य, जम्मू और कश्मीर किसान सलाहकार मण्डल ने फ्लोरीकल्चर मिशन के तहत सीएसआईआर आईआईआईएम की पहुंच की सराहना की और किसान सशक्तीकरण और बड़े पैमाने पर गेंदा के फूलों की टिकाऊ और गुणवत्तापूर्ण उपज के उत्पादन के अलावा पूरे क्षेत्र में किसान परिवारों के लिए लाभकारी और पारिश्रमिक रोजगार के अवसर पैदा करने के लिए इस मिशन के सुनियोजित कार्यान्वयन को एक महत्वपूर्ण उपलब्धि बताया। जम्मू-कश्मीर में इस मिशन के नोडल वैज्ञानिक डॉ. राशिद रसूल ने बताया कि वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद, भारत सरकार के विभिन्न किसान और कृषि-उद्योग उन्मुख, नवाचार संचालित पहलों में से फ्लोरीकल्चर मिशन एक प्रमुख कार्यक्रम है जिसे किसानों और फ्लोरीकल्चर क्षेत्र के समावेशी आर्थिक विकास की परिकल्पना

करते हुए देश भर में लागू किया जा रहा है। इस कार्यक्रम के प्रशिक्षण सत्र के दौरान, डॉ. नेपू राणा और तहूरा अशरफ (मिशन में परियोजना सहयोगी) द्वारा तकनीकी व्याख्यान दिए गए।

किसानों को संसाधनों के इष्टतम उपयोग और फसल मौसम के दौरान फ्लोरीकल्चरल फसलों के अधिक उत्पादन के लिए विभिन्न उन्नत तकनीकों और कार्यप्रणाली की जानकारी दी गई, जिसका उपयोग धार्मिक स्थलों पर पूजा-पाठ के लिए गेंदा के फूलों की आपूर्ति के लिए किया जा सकता है। कार्यक्रम में भाग लेने वाले किसानों ने इस मिशन के विभिन्न कार्यक्षेत्रों के माध्यम से अपने कृषि भूमि के लाभदायक उपयोग के लिए सहायता और गुणवत्ता वाले इनपुट प्रदान करने के लिए संस्थान के प्रति आभार व्यक्त किया।

सीएसआईआर-एसईआरसी और सीएसआईआर मद्रास कॉम्प्लेक्स द्वारा बौद्धिक सम्पदा अधिकार पर कार्यशाला का आयोजन

राष्ट्रीय बौद्धिक सम्पदा महोत्सव 2024 के एक भाग के रूप में बौद्धिक सम्पदा सीएसआईआर-एसईआरसी और सीएसआईआर मद्रास कॉम्प्लेक्स द्वारा संयुक्त रूप से 17 मई 2024 को बौद्धिक सम्पदा अधिकार (आईपीआर) पर एकदिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया।

कार्यशाला के दौरान सीएसआईआर-एसईआरसी के निदेशक और सीएमसी के समन्वयक निदेशक डॉ. एन. आनंदवल्ली ने स्वागत सम्बोधन

प्रस्तुत किया। इस अवसर पर श्री एस. उदय शंकर, उप नियंत्रक, पेटेंट और डिजाइन, भारतीय पेटेंट कार्यालय, चेन्नई ने बौद्धिक सम्पदा महोत्सव में आईपीआर के परिचय और इसके प्रभाव पर व्याख्यान दिया। उन्होंने अपने संबोधन में बौद्धिक सम्पदा के महत्व और इसके संरक्षण की आवश्यकता के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी दी। उन्होंने उन्होंने पेटेंट, कॉपीराइट, ट्रेडमार्क और डिजाइन के बारे में भी विस्तार से बात की।

श्री एम. अजीथ, संयुक्त नियंत्रक, पेटेंट एवं डिजाइन, भारतीय पेटेंट कार्यालय, चेन्नई ने पेटेंट उपयुक्तता मानदंड और



इसे दाखिल करने की प्रक्रियाओं के संबंध में विस्तारपूर्वक बताया। सुश्री के. सुसी, सहायक पेटेंट और डिजाइन नियंत्रक, भारतीय पेटेंट कार्यालय, चेन्नई, ने बौद्धिक सम्पदा अधिकारों के संबंध में पेटेंट हेतु पात्रता और इसे जुड़े केस अध्ययन पर प्रकाश डाला।

डॉ. अजय अग्रवाल, वरिष्ठ वैज्ञानिक, सीएसआईआर-इनोवेशन प्रोटेक्शन यूनिट (आईपीयू) ने पेटेंट और अन्य आईपी दस्तावेजों में निहित तकनीकी-कानूनी और व्यावसायिक जानकारी के संबंध में अपने विचार साझा किए।

सीएसआईआर-एसईआरसी के मुख्य वैज्ञानिक डॉ. पी. हरिकृष्णा ने विशेषज्ञों का संक्षिप्त परिचय श्रोताओं के साथ साझा किया।

इस विशेष कार्यक्रम के समन्वयन में सीएसआईआर-एसईआरसी के मुख्य वैज्ञानिक डॉ. के. सतीश कुमार और सीएसआईआर-एसईआरसी के प्रधान तकनीकी अधिकारी श्री आर. डी. सतीश कुमार ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

सीएसआईआर-सीबीआरआई में एक दिवसीय हिन्दी कार्यशाला सह प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन

सीएसआईआर- केन्द्रीय भवन अनुसंधान संस्थान ने हाल ही में एक दिवसीय हिन्दी कार्यशाला-सह-प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया। कार्यशाला में प्रतिभागिता के लिए संस्थान के वैज्ञानिकों, प्रशासन के अधिकारियों एवं कर्मचारियों को आमंत्रित किया गया था।

कार्यशाला के संयोजक एवं संस्थान के हिन्दी अधिकारी श्री मेहर सिंह ने सभी का स्वागत किया एवं डॉ. प्रदीप चौहान ने श्री पंकज शर्मा जी का औपचारिक परिचय दिया। संस्थान के वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक डॉ. प्रदीप चौहान और प्रशासनिक अधिकारी ने श्री पंकज शर्मा जी का पुष्पगुच्छ देकर स्वागत किया। कार्यशाला को दो सत्रों में आयोजित किया गया। पहले सत्र में “भारत सरकार की राजभाषा नीति एवं उसका व्यावहारिक पक्ष” तथा दूसरे सत्र में “हिन्दी कार्यान्वयन में कंठस्थ सॉफ्टवेयर एवं अन्य ई-टूल्स की भूमिका” के बारे में विस्तार से जानकारी दी गई।

इस कार्यशाला के प्रथम सत्र की अध्यक्षता संस्थान के मुख्य वैज्ञानिक डॉ. हरपाल सिंह ने की। इस अवसर पर डॉ. हरपाल सिंह ने कहा कि हमें अपना समस्त प्रशासनिक कामकाज हिन्दी में करना चाहिए। इसके अलावा वैज्ञानिक और तकनीकी लेख आदि भी हम हिन्दी में लिख सकते हैं। उन्होंने कहा कि चूंकि हमारा संस्थान 'क' क्षेत्र में स्थित है अतः हमें



मूल पत्राचार भी शत-प्रतिशत हिन्दी में ही करना है। कार्यशाला के वक्ता श्री पंकज शर्मा ने प्रथम सत्र में भारत सरकार की राजभाषा नीति की जानकारी दी। इसके अलावा हिन्दी के प्रगामी प्रयोग से संबंधित तिमाही प्रगति रिपोर्ट को भरने के बारे में बताया।

श्री शर्मा ने दूसरे सत्र में राजभाषा विभाग, भारत सरकार के कंठस्थ अनुवाद सॉफ्टवेयर में किस प्रकार से अनुवाद करें, के बारे में बताया, साथ ही टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड में प्रयुक्त किए जा रहे ई-ऑफिस के दूसरे वर्जन के बारे में भी जानकारी दी, जो कि हिन्दी की दृष्टि से सभी प्रतिभागियों को बहुत ही उपयोगी एवं सरल प्रतीत हुआ। कार्यशाला में संस्थान के 24, वैज्ञानिकों, अधिकारियों और कर्मचारियों

ने भाग लिया जिनमें डॉ. हरपाल सिंह, डॉ.एस.आर. कराडे, डॉ. पी.सी. थपलियाल, डॉ. प्रदीप चौहान, डॉ. राजेश वर्मा, श्री परवेश चन्द, श्री विनीत सैनी, डॉ. देबदत्ता घोष, डॉ. कौशिक पंडित, डॉ. अनिन्द पाइन, डॉ. एम. अंसारी, सुश्री प्रिया सिंह, सुश्री दीप्ति कर्माकर, श्री अमन कुमार, श्री श्याम लाल, श्री अर्पण महेश्वरी, श्री धर्म सिंह नेगी आदि सम्मिलित थे।

कार्यशाला के अंत में संस्थान के मुख्य वैज्ञानिक डॉ. एस.आर. कराडे ने वक्ता श्री पंकज शर्मा को एक समृति चिह्न भेंट किया। तत्पश्चात कार्यशाला संयोजक ने वक्ता श्री पंकज शर्मा और सभी प्रतिभागियों का आभार व्यक्त किया।

सीएसआईआर-आईआईपी ने राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस मनाया

वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान परिषद (सीएसआईआर) - भारतीय पेट्रोलियम संस्थान (आईआईपी) ने 10 मई 2024 को 'राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस' मनाया। भारत प्रत्येक वर्ष 11 मई को अपनी प्रौद्योगिकी से जुड़ी महत्वपूर्ण प्रगति को प्रदर्शित करने के लिए राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस मनाता है। यह युवा प्रतिभागों को भी प्रेरित करता है और देश की प्रौद्योगिकीय सर्वोच्चता के बारे में जागरूकता पैदा करता है।

इस अवसर पर डॉ.डी.के. असवाल, निदेशक, स्वास्थ्य, सुरक्षा और पर्यावरण समूह, भाभा परमाणु अनुसंधान केंद्र-बीएआरसी, मुंबई ने उपस्थित होकर इस समारोह की शोभा बढ़ाई। उन्होंने "स्वच्छ पर्यावरण और संधारणीय भविष्य के लिए परमाणु ऊर्जा" विषय पर एक महत्वपूर्ण व्याख्यान दिया। अपने व्याख्यान में डॉ.असवाल ने सुरक्षा खतरों और परमाणु विकिरण के उपयोग से जुड़े विभिन्न मिथकों को स्पष्ट किया। डॉ.असवाल ने इस बात पर बल दिया कि परमाणु ऊर्जा कोयला आधारित ऊर्जा की तुलना में कहीं अधिक सुरक्षित और अधिक किफायती है।



इस अवसर पर सीएसआईआर-भारतीय पेट्रोलियम संस्थान (सीएसआईआर-आईआईपी) के निदेशक डॉ.एच.एस.बिष्ट ने भी विद्यार्थियों को प्रौद्योगिकी और समाज के लिए इसके लाभ के बारे में बताया। इस अवसर

पर सीएसआईआर-भारतीय पेट्रोलियम संस्थान(सीएसआईआर-आईआईपी) में वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक और जिज्ञासा गतिविधियों की समन्वयक डॉ.आरती ने वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान परिषद (सीएसआईआर) - भारतीय पेट्रोलियम संस्थान (आईआईपी) द्वारा की गई जिज्ञासा गतिविधियों का एक

संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया और बताया कि यह स्कूल जाने वाले बच्चों के लिए किस प्रकार से लाभदायक है। इस कार्यक्रम में संस्थान के वरिष्ठ अधिकारियों ने भी बढ़-चढ़ कर प्रतिभागिता की।

सीएसआईआर-आईआईआईएम द्वारा स्वच्छता पखवाड़ा का आयोजन

सीएसआईआर-भारतीय समवेत औषध संस्थान, जम्मू ने 1 से 15 मई, 2024 तक स्वच्छता पखवाड़ा मनाया। स्वच्छता पखवाड़ा स्वच्छ भारत मिशन के तहत भारत सरकार की एक महत्वपूर्ण पहल है जिसका उद्देश्य सरकार के मंत्रालयों/विभागों में स्वच्छता संबंधी मुद्दों और प्रथाओं पर गहन ध्यान केंद्रित करते हुए स्वच्छता हेतु उत्कृष्ट पद्धतियों को अपनाना है।

सीएसआईआर-आईआईआईएम, जम्मू द्वारा स्वच्छता कैलेंडर-2024 के अनुरूप पखवाड़ा से जुड़ी विविध गतिविधियों का आयोजन किया गया। स्वच्छता कैलेंडर भारत सरकार के पेयजल एवं स्वच्छता विभाग द्वारा वर्ष 2024 के लिए जारी किया गया है।

स्वच्छ भारत मिशन के तहत सरकारी कार्यालयों के लिए अपने कर्मचारियों/आगंतुकों के लिए स्वच्छ और स्वस्थ कार्य वातावरण प्रदान करना अनिवार्य है।

स्वच्छता पखवाड़ा की शुरुआत 1 मई को स्वच्छता शपथ के साथ हुई। इस अवसर पर डॉ. ज़बीर अहमद, सीएसआईआर-आईआईआईएम, जम्मू के निदेशक ने वैज्ञानिक, तकनीकी और प्रशासनिक कर्मचारियों तथा शोधार्थियों को स्वच्छता शपथ दिलाई। तत्पश्चात, स्वच्छता की मुख्य गतिविधियों में वृक्षारोपण, पूरे परिसर में सफाई अभियान, संस्थान के विभिन्न अनुभागों द्वारा की गई पुरानी फाइलों की समीक्षा, रिकॉर्डिंग और छंटाई शामिल थी तथा पुरानी और अप्रचलित वस्तुओं को निपटान के लिए चिन्हित किया गया। सीएसआईआर-आईआईआईएम के निदेशक

ने संस्थान की स्वच्छता संबंधी गतिविधियों में सक्रिय भागीदारी के लिए सभी विभागाध्यक्षों, विभिन्न हितधारकों, विशेष रूप से छात्रों, संस्थान में दैनिक साफ-सफाई की निगरानी करने वाले स्वच्छता अनुभाग और इंजीनियरिंग विभाग की सराहना की।

उन्होंने कार्मिकों से न केवल परिसर, प्रयोगशालाओं और कार्यालयों को स्वच्छ रखने के लिए सर्वोत्तम प्रथाओं का पालन करने का आह्वान किया, बल्कि अपने जीवन के सभी क्षेत्रों में स्वच्छता को अपनाने का भी आह्वान किया।

स्वच्छता पखवाड़े के दौरान, सीएसआईआर-आईआईआईएम, जम्मू के निदेशक के नेतृत्व में गठित स्वच्छ भारत मिशन समिति जिसमें पी.एन. गुप्ता, विक्रम सिंह (वरिष्ठ प्रशासन नियंत्रक), अजय कुमार, रवि शंकर, राजेंद्र भंवरिया, लव शर्मा, चंद्र पाल सिंह, अरविंद कुमार यादव, जय शर्मा (आईई सिविल) और पुष्प मेहता (प्रयोगशाला सहायक) शामिल थे, के मार्गदर्शन में पूरे उत्साह के साथ स्वच्छता



गतिविधियों की एक श्रृंखला आयोजित की गई। स्वच्छता के बारे में जागरूकता पैदा करने के लिए "स्वच्छ भारत, स्वस्थ भारत" पर एक पेंटिंग/ड्राइंग प्रतियोगिता आयोजित की गई, जिसमें विभिन्न स्कूलों के छात्रों ने भाग लिया। संस्थान में एक निबंध प्रतियोगिता भी आयोजित की गई, जिसमें शोधार्थियों और कार्मिकों की अच्छी भागीदारी देखी गई।

स्वच्छता पखवाड़ा के दौरान आयोजित विभिन्न गतिविधियों में वैज्ञानिकों, छात्रों, सहायक कर्मचारियों और सफाई कर्मचारियों ने बढ़ चढ़कर भाग लिया। इस अवसर पर प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र वितरित किया गया और चयनित सफाई कर्मचारियों को उनके विशेष योगदान के लिए "प्रोत्साहन राशि" भी प्रदान की गई।

सीएसआईआर-निस्पर द्वारा विश्व बौद्धिक सम्पदा दिवस के अवसर पर एक राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन

सीएसआईआर - राष्ट्रीय विज्ञान संचार एवं नीति अनुसंधान संस्थान (सीएसआईआर-निस्पर) ने विश्व बौद्धिक सम्पदा दिवस के अवसर पर एक राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन किया। इस कार्यशाला का विषय "बौद्धिक सम्पदा एवं संधारणीय विकास लक्ष्य : साझा भविष्य के लिए नवाचार" था। सीएसआईआर - निस्पर द्वारा विज्ञान सूचना भवन, एस.वी. मार्ग परिसर, नई दिल्ली के सेमिनार हॉल में इस कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में लगभग 250 से अधिक स्कूली छात्रों ने भाग लिया। इस अवसर पर पांच उत्कृष्ट नवाचार कर्ताओं ने अपने शोध कार्य को प्रस्तुत किया, उन्हें प्रौद्योगिकी और उद्यमिता में उनके योगदान के लिए सम्मानित भी किया गया।

इस अवसर पर डॉ. कनिका मलिक, वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक एवं कार्यशाला की समन्वयक सीएसआईआर-निस्पर ने राष्ट्रीय विकास के लिए नवाचारों की रक्षा के महत्व को रेखांकित करते हुए बौद्धिक सम्पदा अधिकारों का एक व्यावहारिक परिचय दिया। उन्होंने यह भी बताया कि स्कूली विद्यार्थियों के लिए भी इस क्षेत्र में अपार संभावनाएं हैं और वे अपने करियर के एक विकल्प के रूप में इसे अपना सकते हैं।

सीएसआईआर-निस्पर की निदेशक रंजना अग्रवाल ने अपने संबोधन में कहा कि "ऐतिहासिक रूप से, भारत को प्रायः 'सोने की चिड़िया' के रूप में सम्बोधित किया जाता था, जो इसकी समृद्ध स्थिति और उस महत्वपूर्ण वैश्विक आर्थिक योगदान का प्रमाण है जो एक समय पर 30 प्रतिशत



था। जैसे ही हम आजादी के 75 वर्ष पूरे कर रहे हैं, हमारा सकल घरेलू उत्पाद योगदान 9 प्रतिशत पर समायोजित हो गया है। 2047 को देखते हुए अब हमारी महत्वाकांक्षा इस आंकड़े को 20 प्रतिशत तक बढ़ाने की है। यह लक्ष्य घरेलू तकनीकी नवाचार को बढ़ावा देने और स्वदेशी ज्ञान प्रणालियों के पोषण के महत्व को रेखांकित करता है। उन्होंने कहा कि वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान परिषद (सीएसआईआर) ने हमारे देश की बौद्धिक विरासत की रक्षा करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, जिसका उदाहरण संयुक्त राज्य अमेरिका में हल्दी और बासमती चावल के पेटेंट के विरुद्ध इसकी सफल चुनौती है। इस जीत ने भारत के लिए महत्वपूर्ण पेटेंट पुनः प्राप्त कर लिए। इसलिए यह आवश्यक है कि हम अपनी बौद्धिक सम्पदा की दृढ़ता से रक्षा करते रहें। उन्होंने यह उल्लेख किया कि सीएसआईआर के राष्ट्रीय विज्ञान संचार एवं नीति अनुसंधान संस्थान (निस्पर) द्वारा प्रकाशित जर्नल ऑफ

इंटेलेक्चुअल प्रॉपर्टी राइट्स, इस दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है, जो बौद्धिक सम्पदा के संबंध में जागरूकता और शिक्षा के लिए एक प्रकाशस्तंभ के रूप में कार्य करता है।

कार्यशाला में मुख्य अतिथि के रूप में पेटेंट डिजाइन और ट्रेडमार्क के महानियंत्रक (कंट्रोलर जनरल ऑफ पेटेंट्स, डिजाइन एंड ट्रेडमार्क्स-सीजीपीडीटीएम) प्रोफेसर उन्नत पंडित की उपस्थिति ने कार्यशाला की शोभा बढ़ाई। प्रो. पंडित ने अपने वक्तव्य में संधारणीय विकास लक्ष्यों को प्राप्त करने और नवाचार की संस्कृति को बढ़ावा देने में बौद्धिक सम्पदा की महत्वपूर्ण भूमिका पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि पिछले एक दशक में, भारत ने वैज्ञानिक उपलब्धियों में उल्लेखनीय प्रगति की है और यह हमारे देश के विचारकों की उस सहज नवीन भावना और अनुसंधान कौशल का प्रमाण है जो जमीनी स्तर की चुनौतियों का समाधान करने में निपुण हैं।

उन्होंने आगे कहा कि जब से जागरूकता बढ़ाने के लिए राष्ट्रीय बौद्धिक संपदा (इंटेलेक्चुअल प्रॉपर्टी –आईपी) जागरूकता मिशन शुरू किया गया है तब से केवल एक वर्ष में हमें 90,300 पेटेंट प्राप्त हुए हैं। कार्यशाला का मुख्य आकर्षण युवा नवाचार कर्ताओं और उद्यमियों द्वारा साझा की गई प्रेरक कहानियाँ थीं। इन दूरदर्शी व्यक्तियों ने न केवल अपने-अपने क्षेत्रों में महत्वपूर्ण

प्रगति की है, बल्कि यह भी प्रदर्शित किया है कि कैसे रचनात्मकता और नवाचार एक स्थायी भविष्य का मार्ग प्रशस्त कर सकते हैं।

कार्यशाला में स्कूली छात्रों की भागीदारी विशेष रूप से उल्लेखनीय थी क्योंकि वे नवाचार कर्ताओं के साथ जुड़े हुए थे और बौद्धिक सम्पदा से जुड़े अनुप्रयोगों एवं और प्रगति के बारे में सीख रहे थे।

वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसन्धान परिषद

-राष्ट्रीय विज्ञान संचार और नीति अनुसंधान संस्थान (सीएसआईआर-निस्पर) भारत सरकार के विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्रालय, वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान परिषद के अधीन एक घटक प्रयोगशाला है तथा यह विज्ञान संचार, नीति अनुसंधान और जनता के बीच वैज्ञानिक जागरूकता को बढ़ावा देने के लिए समर्पित संस्थान है।

सीएसआईआर-सीरी द्वारा राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस का आयोजन

सीएसआईआर-केंद्रीय इलेक्ट्रॉनिकी अभियांत्रिकी अनुसंधान संस्थान ने 11 मई, 2024 को राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस मनाया। इस अवसर पर डॉ. (श्रीमती) एन. कलैसेल्वी, महानिदेशक, सीएसआईआर एवं सचिव, डीएसआईआर, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय, भारत सरकार मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित हुईं।

प्रौद्योगिकी दिवस समारोह के विशिष्ट अतिथि के रूप में संस्थान के पूर्व निदेशक एवं अनुसंधान परिषद के अध्यक्ष डॉ. चंद्रशेखर, सीनियर इमेरिटस प्रोफेसर, बिट्स-पिलानी उपस्थित हुए। कार्यक्रम की अध्यक्षता संस्थान के निदेशक डॉ. पी. सी. पंचारिया ने की।

संस्थान के मुख्य सभागार में आयोजित किए गए राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस समारोह में डॉ. एन. कलैसेल्वी, महानिदेशक, सीएसआईआर ने अपने संबोधन में कहा कि पोखरण परमाणु अभियान की भूमि में स्थित सीएसआईआर की राष्ट्रीय प्रयोगशाला में आकर राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस संबोधन देना मेरे लिए गौरव की बात है। उन्होंने डॉ. पंचारिया और उनकी टीम को इस दिवस की हार्दिक

शुभकामनाएं दीं। उन्होंने कहा कि सीरी सहित अन्य सभी सीएसआईआर प्रयोगशालाओं को देश की अपेक्षाओं और आवश्यकताओं के अनुरूप बड़े मिशन पर अन्य मंत्रालयों/ विभागों/

संगठनों के साथ मिलकर सामूहिक रूप से कार्य करना चाहिए। उन्होंने संस्थान की वैज्ञानिक जनशक्ति की प्रशंसा करते हुए वैज्ञानिकों का आह्वान किया कि भारत को विकसित देशों में शामिल करने के लिए वे बड़े उद्देश्य निर्धारित करें और उन्हें पूरा करने के लिए पूरे मनोयोग से प्रयास करें।

उन्होंने संस्थान के सभी शोध उपकरणों व सुविधाओं का स्वयं अनुरक्षण (इन-हाउस मेन्टेन्स) करने के लिए तकनीकी जनशक्ति की



भूरि-भूरि प्रशंसा की। अपने व्याख्यान में डॉ. कलैसेल्वी ने सभी सहकर्मियों को समर्पण और कर्तव्य भावना से कार्य करने के लिए प्रेरित किया। उद्योग जगत के प्रतिनिधियों द्वारा सीएसआईआर की प्रौद्योगिकियों पर अपना विश्वास व्यक्त करने के लिए के उनके प्रति आभार व्यक्त करते हुए उन्होंने कहा कि उद्योग जगत आम लोगों और अनुसंधानकर्ताओं के बीच महत्वपूर्ण सेतु और हमारे राजदूत हैं।



उन्होंने सीएसआईआर और इसकी प्रयोगशालाओं की स्थापना की पृष्ठभूमि पर भी प्रकाश डाला। अपने व्याख्यान के अंत में उन्होंने संस्थान में पुनः आने की भी इच्छा व्यक्त की।

समारोह के विशिष्ट अतिथि प्रोफेसर चंद्रशेखर ने सभी सहकर्मियों को राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस की शुभकामनाएं दीं।

प्रोफेसर चंद्रशेखर ने अपने संबोधन में इस दिवस की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर प्रकाश डालते हुए कहा कि राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस मनाने की शुरुआत 11 मई, 1999 को तत्कालीन प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी द्वारा 11 व 13 मई 1998 को राजस्थान प्रदेश के पोखरण में किए गए भूमिगत परमाणु परीक्षणों की वर्षगांठ मनाने के लिए की गई थी। उन्होंने कहा कि देश के नीति-निर्माताओं ने देश के विकास के लिए स्वतंत्रता प्राप्ति से पूर्व ही भारी उद्योगों, शोध संगठनों और शिक्षण संस्थानों की स्थापना की योजना पर कार्य आरंभ कर दिया था। उन्होंने यह उल्लेख किया कि भारत के वैज्ञानिकों, इंजीनियरों एवं तकनीकीविदों आदि के कारण आज भारत पूरे विश्व में सम्मान की दृष्टि से देखा जाता है। उन्होंने राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस पर सभी तकनीकीविदों से आह्वान किया कि वे देश को

प्रौद्योगिकीय नवाचारों से पोषित करें।

इससे पूर्व कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए डॉ. पी. सी. पंचारिया ने अतिथियों का औपचारिक स्वागत किया। उन्होंने मुख्य अतिथि सीएसआईआर महानिदेशक डॉ. कलैसेल्वी और विशिष्ट अतिथि प्रोफेसर चंद्रशेखर को शॉल एवं स्मृति चिह्न (पौधा) भेंट कर सम्मानित किया। अपने संक्षिप्त संबोधन में डॉ. पंचारिया ने प्रौद्योगिकी दिवस मनाने की पृष्ठभूमि को रेखांकित करते हुए सभी को राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस की बधाई दी।

कार्यक्रम का संचालन श्री प्रमोद तँवर, प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रमुख, पीएमई ने किया। अंत में डॉ. सुचंदन पाल, मुख्य वैज्ञानिक एवं प्रमुख, सेमिकंडक्टर्स एवं माइक्रोसेंसर्स समूह ने धन्यवाद ज्ञापित किया। इससे पूर्व प्रातःकालीन सत्र में सीएसआईआर की महानिदेशक डॉ. एन. कलैसेल्वी ने संस्थान के निदेशक डॉ. पी. सी. पंचारिया एवं सभी समूह प्रमुखों/वरिष्ठ अधिकारियों के साथ चर्चा की और उन्हें वैश्विक वैज्ञानिक परिदृश्य के परिप्रेक्ष्य में भारत सरकार और सीएसआईआर की अपेक्षाओं से अवगत कराया।

प्रौद्योगिकी हस्तांतरण

राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस समारोह के दौरान संस्थान के वैज्ञानिकों द्वारा पेयजल की गुणवत्ता मापने के लिए विकसित ऑल-इन-वन 'आईओटी एनेबल्ड फील्ड डिप्लॉयेबल वाटर टेस्टिंग किट' और रक्त में हीमोग्लोबिन की मात्रा की जांच करने के लिए विकसित 'हैंडहेल्ड आईओटी एनेबल्ड मिनिमल इनवेसिव बेस्ड हीमोग्लोबिन डिटेक्शन सिस्टम' से जुड़ी प्रौद्योगिकी उद्योग जगत को हस्तांतरित की गई। डॉ. सत्यम श्रीवास्तव एवं उनकी टीम द्वारा विकसित दोनों प्रौद्योगिकियों का हस्तांतरण मेसर्स प्लास्टी सर्ज प्रा. लि., अमरावती (महाराष्ट्र) को किया गया।

प्रौद्योगिकी हस्तांतरण संबंधी समझौता ज्ञापन में डॉ. मनीष मैथ्यु, वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रमुख, टीबीडी, सीएसआईआर-सीरी तथा श्री आदित्य डागा, सीईओ, मेसर्स प्लास्टी सर्ज प्रा. लि. ने हस्ताक्षर किए।

प्रगति, विकास और आशा : सीएसआईआर समाचार

पानी की गुणवत्ता मापने वाला 'स्मार्ट वॉटर एनालाइज़र' पीएच, गंदलापन (Turbidity), कठोरता (Hardness), एल्कलेनिटी, क्लोरीन, सल्फेट, पोटाशियम, तांबा, क्लोराइड, मैंगनीज़, फ्लोराइड, अमोनिया नाइट्रेट, बोरोन, जिंक आदि 22 पैरामीटरों पर पानी की जाँच करता है।

यह प्रणाली ऑनलाइन और ऑफलाइन दोनों प्रारूपों से कार्य करती है। वहीं संस्थान द्वारा विकसित 'स्मार्ट हीमोग्लोबिन मापन प्रणाली' से रक्त में हीमोग्लोबिन की मात्रा की जाँच भी त्वरित एवं अत्यंत किफायती होगी। दोनों ही डिवाइस (सिस्टम) पूर्णतया स्वदेशी हैं।

इलेक्ट्रॉनिकी विज्ञान दीर्घा एवं कैफेटेरिया भवन (विस्तार) का उद्घाटन

राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस के अवसर पर संस्थान में आगमन पर सर्वप्रथम डॉ. कलैसेल्वी ने संस्थान की नवनिर्मित इलेक्ट्रॉनिक्स साइंस गैलरी का उद्घाटन किया। उन्होंने विज्ञान दीर्घा में प्रदर्शित संस्थान में चल रही विभिन्न परियोजनाओं के तकनीकी पोस्टरों सहित प्रमुख शोध उत्पादों का अवलोकन किया। इसके अलावा महानिदेशक महोदया ने सीरी कैफेटेरिया के नवनिर्मित विस्तार भवन का भी उद्घाटन किया।

प्रौद्योगिकी प्रदर्शनी एवं प्रयोगशाला परिदर्शन



डॉ. कलैसेल्वी ने सीएसआईआर-सीरी द्वारा विकसित प्रमुख प्रौद्योगिकियों की प्रदर्शनी का भी अवलोकन किया और संबंधित वैज्ञानिकों से उत्पादों एवं प्रौद्योगिकियों के संबंध में चर्चा की। प्रयोगशाला भ्रमण के दौरान अपने उन्होंने संस्थान के वैज्ञानिकों द्वारा विकसित प्रौद्योगिकियों एवं उपलब्धियों की सराहना की। उन्होंने संस्थान की शोध प्रयोगशालाओं में संस्थान की शोध गतिविधियों का प्रत्यक्ष अवलोकन किया।

प्रीसीजन कृषि प्रायोगिक स्टेशन का भ्रमण

अपने पिलानी प्रवास के दौरान डॉ. एन. कलैसेल्वी एवं श्री प्रबन्ना बालन ने दिनांक 12 मई, 2024 को संस्थान के प्रीसीजन कृषि प्रायोगिक स्टेशन का भी अवलोकन किया। उन्होंने संस्थान के प्रौद्योगिक स्टेशन में लगाए



गए हर्बल उद्यान सहित सेंसर आधारित ड्रिप सिंचाई प्रणाली, माइक्रोफार्मिंग एवं अन्य शोध गतिविधियों का अवलोकन किया। अतिथियों द्वारा इस अवसर को यादगार बनाने के लिए कृषि स्टेशन में पौधारोपण भी किया गया। संस्थान के प्रीसीजन कृषि प्रायोगिक स्टेशन भ्रमण के बाद डॉ. पी. सी. पंचारिया एवं अन्य वरिष्ठ अधिकारियों ने महानिदेशक महोदया एवं श्री बालन को सादर विदा किया।

इस प्रकार महानिदेशक महोदया का सीएसआईआर-सीरी, पिलानी दौरा संपन्न हुआ।